बदलता परिवेश साहित्य और मीडिया

मिराण्डा हाउस, हिन्दी विभाग

विदेश शाखा
घोराही उप महानगरपालिका-15, नया रतनपुर,
गोपाल चौक, दाङ, नेपाल (पिन : 22415)
फोन : 9857826417, 9815465315

शाखा
अनंग प्रकाशन / ठा. गजराज सिंह, भगतपुर,
पोस्ट - भगतपुर, जिला- अलीगढ़ 203132

अनंग प्रकाशन
फोन नं. 09350563707

सर्वाधिकार : संपादक
प्रथम संस्करण : 2019
मूल्य : 595 रुपये
ई-मेल : anangprakashan@gmail.com
ISBN : 978-93-80845-50-0

अनंग प्रकाशन, बी-107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053, शब्द-संयोजन : सिद्ध-भभूति ग्राफिक्स, दिल्ली-110053, मुद्रक : राजोरिया प्रिन्टर्स, दिल्ली-32 से मुद्रित।

अनुक्रम

क्या कहती है पुस्तक 9

(बदलता परिवेश और अस्मितामूलक साहित्य)

समकालीन आदिवासी लेखन : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ 15
— *विकल सिंह*

आदिवासी साहित्यिक विमर्श के प्रतिमान, समस्याएँ व सम्भावनाएँ 27
— *डॉ. प्रीति सिंह*

हिन्दी में आदिवासी लेखन की पृष्ठभूमि 37
— *पुनीता जैन*

विस्थापित भाषा का अस्तित्व 47
— *प्रीति*

आदिवासियों और नक्सलवाद के बीच का अंत:संबंध 59
— *प्रदीप कुमार सिंह*

हिंदी नाटकों में उभरता आदिवासी रंगमंच 64
— *मनीष कुमार*

राकेश कुमार सिंह के उपन्यासों में जल, जंगल, जमीन के संघर्ष 70
— *मो. आजम शेख*

भारत की आदिवासी कथा लेखिका और
उनकी कहानियों में समकालीन जीवन 76
— *डॉ. हीरा मीणा*

ये मुख्यधारा है या दबदबे की साजिश 97
— *आलोक कुमार मिश्रा*

तमस : सांप्रदायिकता और हाशिए का समाज 102
— *डॉ. नवाब सिंह*

आदिवासी साहित्यिक विमर्श के प्रतिमान, समस्याएँ व सम्भावनाएँ

डॉ. प्रीति सिंह

आदिवासी साहित्य का अध्ययन करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनमें आदिवासी की पहचान का संकट, संपर्क का अभाव, लिपि विहीन मौखिक साहित्यिक परंपरा, मूलपाठ की समस्या, राज्य द्वारा सहयोग और संरक्षण का अभाव, बेरोजगारी और विस्थापन, आदिवासियों के अस्तित्व का संकट शैक्षणिक क्षेत्र में आदिवासी साहित्य को पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकृति प्राप्त नहीं होना, आदिवासी साहित्य से संबंधित कोशों का अभाव, कुछ क्षेत्रों में बाहरी समाज की राजनीतिक और वर्चस्ववादी मनोवृत्ति प्रमुख है।

समस्या यहाँ भी आती है कि लिखित मुख्यधारा के साहित्य समाज में आदिवासियों की अभिव्यक्ति को अल्प स्तर पर रखा गया है, तो यहाँ स्वानुभूति बनाम सहानुभूति की बहस से इतर अनुभव की आधिकारिता का प्रश्न उठता है। इस संदर्भ में हरिराम मीणा जी का कथन उल्लेखनीय है-"कोई लेखक जन्मना आदिवासी है कि नहीं यह महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यदि कोई गैर-आदिवासी लेखक अपने आदिवासी जीवन के आधिकारिक अनुभव के आधार पर साहित्य रच रहा है तो ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति आदिवासी साहित्य की श्रेणी में आयेगी, इसलिए हमारा यह आग्रह नहीं है कि जो जन्मना आदिवासी नहीं है वो आदिवासी साहित्य नहीं रच सकता। सवाल आधिकारिक अनुभव का है, अधिकारिक अनुभव का मतलब है उसके भौतिक जीवन, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलू की अभिव्यक्ति क्या है? उसकी मानसिकता, भौगोलिक अंचल, परिवेश किस तरह के हैं? उसका जमीन, आसमान, हवा, पानी, जंगल, पहाड़, नदियों संपूर्ण प्रकृति के साथ संबंध क्या है? तब उस रचनाकार को आदिवासी जीवन का आधिकारिक अनुभव होगा।"[1]